तीजनबाई

सुनीता ठाकुर

'तीजनबाई' आज कोई नया नाम नहीं है। अपने देश की संस्कृति, लोकगीत, नृत्य को जानने वाला हर शख़्स उसे जानता है। छत्तीसगढ़ के गानेयरी गांव की तीजन। एक आम ग्रामीण परिवार की बहू तीजन। एक गरीब आदमी की गरीब पत्नी, बच्चों की मां पर इन सबके साथ या इनसे ऊपर एक खुद्दार औरत। जिसने तमाम रूढ़ियों और बंधनों को ताक पर रखकर अपनी एक अलग पहचान बनाई।

अकेली यात्रा

जब वह चली थी, उसके साथ कोई नहीं था। देहरी से बाहर, घूंघट से ऊपर तीजन ने झांका। उसे अपने मन का वह पंछी खुली उड़ान भरता नज़र आया जो अब तक उसके भीतर फरफरा रहा था। उसने ठान लिया। घूंघट उठ सकता है– देहरी लांघी जा सकती है, बंधन तोड़े जा सकते हैं। पल्लू से फेंटा बांध, हाथ में तंबूरा थामे वह स्टेज पर उतर आई-लोग हक्के-बक्के थे। घर की बहू तीजन और स्टेज पर बिजली सी कौंधती तीजन-सच कौन थी वह या यह। इतनी चमक, इतना हुनर, इतनी तेज़ी, इतना जोश-लोग हैरान थे और तीजन, उसके लिए तो फैला था पूरा मंच रूपी आकाश–उसकी यात्रा यहीं से शुरू हुई। सास-ससुर, पति भड़क उठे। नाक कटने के ताने, समाज में बेइज़्ज़ती के उलाहने, लोगों की फब्तियां, मजाक, सरेआम पति द्वारा बेइज़्ज़ती, बदनामी क्या-क्या नहीं हुआ, मगर

तीजन के पास वक्त कहां था– उसे तो उन आकाशों की थाह लेनी थी। सामने थीं उमंगें,

जोश और पूरा एक महाभारत—जीवन का और शास्त्रों का भी। उसके पास हथियार नहीं थे, ज्ञान नहीं था, संगी साथी भी नहीं। पति, बच्चे, घर-बार सब पीछे छूट गया। वह चली आई—अपने हौसले, अपने निश्चय, अपने हुनर, लगन और मेहनत को पल्लू में बांधकर।

बंधन टूटे

तीजन आज़ाद थी। उसे नियमों की परवाह नहीं थी- अब कौन उसे बांध सकता था। वह समूहों में गाती, छोटे-छोटे मंचों पर गाती, मेला-हाट, तीज-त्यौहार किसी भी मौके पर सबके सामने। अपनी कड़कती, गरजती आवाज़ में पांडवों की एक-एक कथा गाती। जैसे सागर की अनगिनत लहरें टकराती हों। तीजन का जोश पछाड़ें मारता और सुनने वाले देखते रह जाते। वह बिजली की तरह स्टेज पर कौंधती। कभी शेर की तरह दहाड़ती हुई, कभी मां की तरह दुलारती हुई, कभी पत्नी की तरह प्रेम में डूबी, कभी राजनीतिज्ञ की तरह कुटिल चाल, व्यंग्य, हाव-भाव में बोलती हुई। शरीर का अंग-अंग फड़क उठता, पोर-पोर थिरकने लगता, उसका तंबूरा कभी अर्जुन की प्रत्यंचा बन जाता, तो कभी भीम की गदा सा तन उठता। पांडव-कथा का गान करती तीजन अपनी सुध-बुध बिसरा बैठती। उसके चारों ओर एक मोहित करने वाली आभा फैली होती।

लोककला का नया रूप

तीजन अपने नाम में संगीत समेटे, काम में लय बांधे और आवाज में सुर-ताल लिए विरोध की साकार-प्रतिमा। उसने परंपराओं की जड़ता नकार दी, मगर जड़ होती एक पारम्परिक लोककला 'पांडवानी' को नया जीवन दिया, नई पहचान दी। तुलसीदास की तरह उसने शास्त्रकथा को जनता तक पहुंचाया और मीरा की भांति गीतों को नया अर्थ दिया।

तीजन अपने नाम में संगीत समेटे, काम में लय बांधे और आवाज में सुर-ताल लिए विरोध की साकार-प्रतिमा। उसने परंपराओं की जड़ता नकार दी, मगर जड़ होती एक पारम्परिक लाककला 'पांडवानी' को नया जीवन दिया, नई पहचान दी।

तीजन का यह नाटक अपने बूते पर था। अपनी प्रतिभा, अपनी कल्पना और सोच उसमें छाई रहती। कला पुरानी थी, अन्दाज़ नया। तीजन के हाव-भाव सदियों पुराने पांडवों को सामने ले आते। लोगों ने तीजन का तालियां बजाकर स्वागत किया। गांव की एक गुमनाम तीजन संसार के चमकते सितारों में जगमगा उठी—सिर्फ अपनी मेहनत अपने हौसले के बल पर।

आज उसका बेटा स्टेज पर उसका साथ देता है। पति उसकी तारीफ करते नहीं थकता। तीजन भरा-पूरा परिवार छोड़कर जरूर निकली थी। मगर उससे कहीं अधिक खुशहाल गृहस्थी आज उसके पास है। वही घर, वही लोग, वही समाज और वही तीजन—बदला है सिर्फ घूंघट। टूटा है सिर्फ देहरी का बंधन। गूंजी है सिर्फ आवाज़ अपने अधिकारों की, तनी है सिर्फ एक मुट्ठी फैसले की। हममें से न जाने कितनी तीजन आज भी समाज और परिवार के दायरों में अपनी प्रतिभा और प्रत्यंचा लिए बैठी हैं। गांव से संसार तक उनकी कल्पनाएं भी उड़ानभर सकती हैं—देर सिर्फ तीजन जैसे उत्साह और फैसले की है। □